ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014 (UIF)

REVIEW OF RESEARCH

VOLUME - 6 | ISSUE - 9 | JUNE - 2017

हरिवंशराय बच्चन के काव्य में राजनीतिक पक्ष

Dr. Kusam Lata
Assitt. Professor Hindi in S.V.S.D. Post Graduate College, Bhatoli,Distt Una(H.P)

प्रस्तावना :

राजनीति शब्द अंग्रेजी भाषा के पॉलीटिक्स का हिन्दी रूपान्तरण है, जोकि यूनानी भाषा के पोलिस से बना है। जिसका अर्थ-नगर अथवा राज्य है। इसका शाब्दिक अर्थ बताते हुए 'नवीन नारायण' ने कहा है, ''युनानी भाषा में पोलिस शब्द का प्रयोग दुर्ग, समाज, नगर आदि अनेक अर्थों में होता था।''[1] राजनीति शब्द का अर्थ वास्तव में समाज को व्यवस्थित करने को ही कहा जा सकता है। राजनीति और साहित्य का बाहरी संबंध होता है। कोई भी साहित्य अपनी समकालीन राजनीति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। 'जगन्नाथ शर्मा' ने 'साहित्य की वर्तमान धारा' में कहा है, ''यदि कोई व्यक्ति यह कहता है कि उसे राजनीति से लगाव नहीं है अथवा राजनीति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है तो उसका कथन असंगत नहीं अपितु घोर अहंवादी और असामाजिक भी है।''[2] वास्तव में साहित्यकार अपने स्वतन्त्र विचारों से समाज में व्याप्त बुराईयों की ओर आम जनता का ध्यान आकर्षित करता है। उन्हें उनके अधिकारों के प्रति सजग करता है और युगद्रष्टा बनकर नेतृत्व प्रदान करता है।

हरिवंशराय बच्चन का राजनीति से विशेष संबंध रहा है। जिसका सजीव चित्र उभरकर काव्य में दृष्टिगोचर हुआ है। बच्चन ने अपने जीवन में स्वतन्त्रता संग्राम के समय प्रत्येक आन्दोलन में भाग लिया, कारावास में रहे। नेहरू परिवार और गाँधी परिवार से उनका विशेष संबंध रहा है। सन् 1966 से 1972 तक वे राष्ट्रपति द्वारा राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किए गए। बच्चन के काव्य के राजनीतिक पक्ष में गाँधीवादी विचारधारा, राजनीतिक चेतना, आदर्श राजनेताओं के प्रति श्रद्धा भावना, क्रान्तिकारी विचारधारा आदि तत्वों को उद्घाटित किया गया है।

गाँधीवादी विचारधारा

गाँधीवाद सत्य एवं अहिंसा का समर्थक है। गांधी जी अंहिसा के पक्षपाती थे। बच्चन गाँधीवादी थे। उन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भी विशेष रूप से भाग लिया था। गाँधी की हत्या पर बच्चन ने दो काव्य संग्रहों की रचना कर डाली और उनके हत्यारे पर व्यंग्य किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद और गाँधी की हत्या के बाद गाँधीवादी नेताओं के ढोंग और पाखण्ड पर भी बच्चन ने करारी चोट की है। बच्चन ने अपने काव्य में सत्य को अपनाया और अहिंसा का साथ दिया तथा सबको सत्या और अहिंसा की प्रेरणा दी। बच्चन ने अपने काव्य में गाँधी जी की महिमा गायी है। बच्चन ने 'खादी के फूल' में सत्य और अहिंसा को विशेष महत्व दिया है। प्रत्येक मानव के जीवन में यह विचार देश को विकसित बनाने में महत्त्वपूर्ण होंगे। उन्होंने सत्य और अहिंसा के महत्त्व को समझाते हुए स्पष्ट किया है :

''सत्य अहिंसा बन अर्न्तराष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शों से भरते हैं भू के व्रण।
झुका तड़ित-अणु के अश्वों को कर आरोहण

[1] नवीन नारायण अग्रवालः राजनीति विज्ञान के मूल सिद्धान्त, पृ0-6
[2] जगन्नाथ शर्माः साहित्य की वर्तमान धारा, पृ0-168

नव मानवता करती गाँधी की जय-जय घोषणा।''[3]

मानव जीवन में अहिंसा के बिना सत्य को प्राप्त करना असम्भव है। जो व्यक्ति अहिंसा के रास्ते पर चल पड़ता है, उसे स्वयं ही परम सत्य की प्राप्ति हो जाती है। बच्चन ने सत्य और अहिंसा की ओर ले जाने वाले गाँधी जी के विचारों को विशेष महत्त्व दिया है। बच्चन ऐसी ही अभिव्यक्ति गाँधी जी के माध्यम से देते हुए 'खादी के फूल' में कहते हैं :-

''तुम सत्य-अहिंसा के मत से कैसे हटते,
दृढ़ बीज आदि से इनका था मन में बोया,
हम चकित, कृतज्ञ, तुम्हारे आगे नत इस पर-
हममें भी जो
विश्वास न था
तुमने खोया।''[4]

देशवासियों को सत्य और अंहिसा का महत्त्व बताते हुए गाँधी जी की महानता का वर्णन करते हैं। वे कहते हैं कि सत्य और अहिंसा को तुम कैसे छोड़ सकते हो क्योंकि इसका बीज आपके मन में गाँधी जी ने बोया था। हम गाँधी जी के कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें यह रास्ता दिखाया।

बच्चन की आन्तरिक संवदेनाओं का कवि पहले से ही लोकजीवन और भौतिक जगत् की ओर उन्मुख हो चुका था। उसमें गाँधी जी की हत्या ने उन्हें और भी झकझोर दिया था। विश्व की इतनी बड़ी घटना पर मौन साध जाना 'बच्चन जैसे कवि के वश की बात नहीं थी। बच्चन गाँधी जी को आदर्श मानते थे। बच्चन 'खादी के फूल' में अपनी इसी आदर्श वादिता को स्पष्ट करते हुए कहते हैं :-

''वे भावी मानवता के हैं आदर्श एक,
असमर्थ समझने में है उसको वर्तमान,
बनो सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,
यह जाती दुनिया से होकर लोहू-लुहान।''[5]

बच्चन गाँधी जी के अनन्य भक्त थे। गाँधी जी की मृत्यु का बच्चन को एक असहय झटका लगा। गाँधी जी की मृत्यु पर उन्होंने दो काव्य रचनाएं लिखीं। 'सूत की माला' और 'खादी के 'फूल' दोनों रचनाएं गाँधी जी की मृत्यु के बाद उनको श्रद्धाजंलि के रूप में समर्पित की हैं। बच्चन ने गाँधी जी के साथ अनेक आन्दोलनों में भाग लिया। कारावास में भी रहे इसलिए वे गाँधी जी को ही अपना आदर्श मानते थे। उनके काव्य में गाँधी जी का वर्णन ही उनकी गाँधीवादी विचारधारा है।

राजनीतिक चेतना :-

राजनीति में शासन व्यवस्था, जन-साधारण, राजनेता आदि के दायित्व-अधिकारों से सम्बन्द्ध पक्ष आते हैं। चेतना का अर्थ है - सामूहिक ज्ञान। 'इनसाईक्लोपीडिया ऑफ अमेरिका' में चेतना का अर्थ है- कॉनशियसनैंस अर्थात् वस्तुओं का सामूहिक ज्ञान ही चेतना है।''[6] राजनीतिक चेतना अपने देश के प्रति सच्ची भावना है। जो देश को सुदृढ़ तथ जागृत करने में सहायक होती है। बच्चन का काव्य छायावादोत्तर काव्य माना जाता है। बच्चन ने जीवन में राजनीतिक संघर्ष देश में हो रहे स्वतन्त्रता संग्राम सब कुछ अपनी आँखों से देखा है और उनमें भाग लिया है। इसलिए बच्चन राजनीतिक चेतना के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने सम-सामयिक परिस्थितियों का वर्णन भी भली-भान्ति किया है।

बच्चन अपने युग के प्रति सजग रहे हैं। उन्होंने अपने युग की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को अपनी कलम द्वारा अपने काव्य में संजोया है। बच्चन ने अपने काव्य में राजनीतिक चेतना को कई रूपों में प्रदर्शित किया है। उन्होंने नौजवानों का आह्वान, देशवासियों को जागृति की प्रेरणा, रामराज्य की कल्पना, पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति, देश को सुदृढ़ और एकता में बाँधने की कामना आदि के द्वारा देश की रानीतिक चेतना पर बल दिया है। देश की स्वतन्त्रता के बाद भी जब मानवता का शोषण होता है, तब बच्चन सह नहीं पाते। बच्चन नौजवानों का आह्वान करते हुए 'बुद्ध और नाचघर' में कहते हैं :-

[3] बच्चन खादी के फूल, पृ0-19
[4] बच्चनः वही पृ0-138
[5] बच्चनः खादी के फूल पृ0-161
[6] इनसाइक्लोपीडिया ऑफ अमेरिका, वॉलिया-7, पृ0- 537

"ओ जो तुम उठाते हो नारा-उत्थान, पुनरूत्थान, अभ्युत्थान,
तुम्हारे ही लिए तो उठता है मेरा कलम,
खुलती है मेरी जवान
ओ-जो तुम ताजे
ओ-जो तुम जवान।[7]"

वे नौजवानों को पुनरूत्थान और अभ्युत्थान की प्रेरणा देते हैं 'धार के इधर-उधर' में बच्चन सैनिक नौजवानों का आह्वान करते हुए कहते हैं :-

"औरों की धरती के ऊपर आँख नहीं हम रखते हैं,
पर अपनी पर औरों का अधिकार नहीं सह सकते हैं,
आज बता देंगे हम कितने पक्के अपनी आन के,
भारत माता के बेटे हम चलते सीना तान के।"[8]

बच्चन देशवासियों को उस समय की याद दिलाते हैं और जागृत करते है कि जब भारत में आजादी का संघर्ष चल रहा था और शहीदों ने अपनी जाने गंवाई थीं। 'अभिनव सोपान' में बच्चन ऐसी ही अभिव्यक्ति देते हुए देशवासियों को जागृत करते हुए कहते हैं:-

"आग लगी धरती के तन में
मनुज नहीं बदला पाहन में
अभी श्यामला, सुजला, सुफला ऐसे नहीं मरी
पृथ्वी रक्तस्नान करेगी।"[9]

बच्चन 'धार के इधर-उधर' में देशवासियों को इस प्रकार जागृत करते हैं :-

"बढ़ो गनीम सामने खड़ा हुआ,
बढ़ो निशान जंग का गड़ा हुआ,
सपृश मिला कभी नहीं पड़ा हुआ,
मिटो मगर,
लगे न दाग,
देश पर।"[10]

देश की रक्षा के लिए हमें सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। बच्चन ने अपने काव्य में पुनर्जागरण को भी अभिव्यक्ति दी है। देशवासियों को पुनर्जागरण की ओर जागृत करते हुए कहते हैं :-

"जगो कि तुम हजार साल सो चुके,
जगो कि तुम हजार साल खो चुके,
जहान सब सजग, समेत आज हो,
तुम्हीं रहो, पड़े हुए
न बेखबर।[11]

अपने देश को सुदृढ़ तथा एकता के सूत्र में बाँधने के लिए बच्चन हमेशा संघर्षरत रहे हैं। सम्पूर्ण भारवासियों का आह्वान करते हुए 'खादी के फूल" में कहते हैं:-

[7] बच्चनः बुद्ध और नाचघर, पृ0-28
[8] बच्चनः धार के इधर-उधर, पृ0-123
[9] बच्चनः अभिनव सोपान, पृ0-283
[10] बच्चनः धार के इधर-उधर, पृ0-128
[11] बच्चनः वही, पृ0-68

''तैयार आज हिन्दू-मुस्लिम के धर्म-दीन,
तेरी जवान में ताकत है दिल के दिलेर,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर,
अपना रोशन कलम उठा, मत लगा देर,
मुल्की सिपाहपन को करना है हमें जेर,
है हमें बनाना नया एक हिन्दोस्तान,
हिन्दू-मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई जिसमें समान।''[12]

राजनीतिक चेतना को बच्चन भारत में पुनर्जागृत करना चाहते हैं। अपने आह्वानों से देश को सुदृढ़ बनाने तथा एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयत्न करते हैं। रामराज्य भारत में लाना चाहते हैं।

आदर्श राजनेताओं के प्रति श्रद्धा भावना :-

प्रत्येक युग में आदर्श नेता हुए हैं। आदर्श राजनेता सम्पूर्ण राष्ट्र का हित करने वाले होते हैं। अपने देश के प्रति, देशवासियों के प्रति उनकी आदर्श भावना होती है। बच्चन का समय राजनीतिक संघर्ष का समय था। देश में परतन्त्र होने के कारण अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियां थीं। वे गाँधी जी के आदर्श पर चलने वाले थे। देश की स्वतन्त्रता के बाद और गाँधी जी की मृत्यु के बाद देश की बागडोर सम्भालने वाले राजनेताओं की आवश्यकता थी। उस समय देश में अनेक राजनेता थे, जिनके प्रति बच्चन की अपार श्रद्धा थी। उन्होंने ऐसे राजनेताओं को अपने काव्य में सर्वोच्च स्थान दिया है। बच्चन ने अपने काव्य में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पं0 जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल आदि राजनेताओं के प्रति श्रद्धा भावना अनेक रूपों में व्यक्त की है। बच्चन ने गाँधी के आदर्शों को दिल से स्वीकार किया है। राष्ट्र के सम्पूर्ण लोगों को गाँधी जी जैसा बनने की प्रेरणा दी है। वे उनके प्रति पूरी तरह समर्पित थे। 'खादी के फूल', 'सूत की माला' दोनों काव्य संग्रह गांधी जी को श्रद्धाजंलि के रूप में समर्पित हैं।

'खादी के फूल' में गाँधी जी को श्रद्धाजंलि देते हुए कहते हैं :-

''बार-बार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन,
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन?
व्याप्त हो गए जन-मन में तुम आज महात्मन्
नव प्रकाश बन, आलोकिक कर नव जग-जीवन।''[13]

बच्चन -सूत की माला' में गाँधी की मृत्यु के बाद उनकी काया को पवित्र करने की कामना अग्निदेव से करते हुए कहते हैं :-

'' हे अग्निदेव, तुम जिसको भी छू देते,
उसको अपने सा पावन कर लेते,
बापू की पावन काया के कण-कण को
कर दो शुचितर
शुचित्तम उज्जवल
चिर निर्मल।''[14]

अग्नि ही मृत शरीर को अपने में मिला लेती हैं, और पावन कर देती है। गाँधी जी के प्रति बच्चन की यही आदर्श श्रद्धा है, जो उनके काव्य में दृष्टिगोचर हुई है।

गाँधी जी की मृत्यु के बाद नेहरू की ओर आश्वस्त भाव से देखकर कवि प्रशस्ति के गीत गाते हैं। नेहरू को देश की बागडोर संभालने की ओर प्रेरित करते हुए 'सूत की माला' में उनको सम्बोधित करते हुए कहते हैं:-

[12] बच्चनः खादी के फूल, पृ0-45 (5)
[13] बच्चनः खादी के फूल, पृ0-27
[14] बच्चनः सूत की माला, पृ0-109

''तुमको है रोने-धोने का अवकाश नहीं,
गम में अपने को खोने का अवकाश नहीं,
दुखिया भारत करता, तुमसे कुछ प्रत्याशा,
तुम उसको स्वस्थ
करो, उसका परिताप हरो।''[15]

वे नेहरू को ही देशवासियों को सम्भालने की ओर अग्रसर कर रहे हैं। वे 'सरदार बल्लभ भाई पटेल' के प्रति अपनी श्रद्धा भावना इस प्रकार व्यक्त करते हैं :-

''यही प्रसिद्ध लौह का पुरूष प्रबल,
यही प्रसिद्ध शक्ति की शिला अटल,
हिला इसे सका कभी न शत्रु दल,
पटेल पर
स्वदेश को
गुमान है।[16]

बच्चन के संस्कारों ने ही उन्हें धर्म कर्म विषयक महापुरुषों गाँधी जी, पं0 जवाहर लाल नेहरू, लौह-पुरुष सरदार पटेल की ओर उन्मुख किया। उनकी आदर्श राजनेताओं के प्रति भक्ति-भावना ही श्रद्धा के रूप में काव्य में व्यक्त हुई है। बच्चन की श्रद्धा-भावना कभी हमें महापुरुषों की कभी राज नेताओं की आरती उतारती हुई नजर आती है।

क्रान्तिकारी विचारधारा :-

क्रान्ति से अभिप्राय, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, विषमताओं और जर्जर रूढ़ियों के प्रति विद्रोह करना, उनसे लड़ना, उनके प्रति संघर्ष करने से है। सामाजिक अव्यवस्था को सुव्यवस्था में बदलना, असफलताओं को मिटाकर समानता कायम करना ही क्रान्ति है। क्रान्ति की अजस्र ललकार समाज के अमूल-चूल ढाँचे में परिवर्तित करती है तथा समाज को प्रगति पथ की ओर अग्रसर करती है। बच्चन क्रान्तिकारी विचारधारा के पक्षपाती रहे हैं। उन्होंने अपने काव्य में बुलबुल के माध्यम से राष्ट्रीय क्रान्ति को उद्‌बोधित किया है। उन्होंने बंगाल की क्रान्ति का वर्णन भी किया। देशवासियों को स्वतन्त्रता के लिए क्रान्तिकारी बनने की प्रेरणा दी है। बंगाल का काल में बंगवासियों को अपने क्रान्तिकारी विचारों से परिचित करवाया है। बच्चन 'बुलबुल' के माध्यम से क्रान्ति का आह्‌वान करते हुए कहते हैं :-

''करें आओ विस्मृत वे भेद,
रहे जो जीवन में विष घोल,
क्रान्ति की जिह्‌वा बनकर आज,
रही बुलबुल डालों पर बोल।''[17]

बच्चन ने आगे 'मधु वाला' में 'बुलबुल' नामक कविता मैं बुलबुल के माध्यम से अपने राष्ट्रीय क्रान्ति के उद्‌गारों को मुखरित किया है। इस कविता में बच्चन ने अपने ऊपर आक्षेपों- आरोपों का उत्तर दिया, वहीं दूसरी और जनसेवा और विश्व कल्याण की कामना को भी वाणी दी गई है। 'बुलबुल' क्रान्ति के स्वर में कुहकती है :

''विभाजित करती मानव-जाति,
धरा पर देशों की दीवार,
जरा तो ऊपर उठकर देखो,
वही जीवन है, इस-उस पार।''[18]

[15] बच्चनः सूत की माला, पृ0-45
[16] बच्चनः धार के इधर-उधर, पृ0-71

[17] बच्चनः मधुवाला, बुलबुल, पृ0-11
[18] बच्चनः वही, पृ0-10

बच्चन बंगाल के निवासियों को कहते हैं कि सब एक हो जाओ और इस नारे को याद रखो :-

''इन्कलाब जिन्दाबाद,
सब मनुष्य है एक समान,
इन्कलाब जिन्दाबाद,
नहीं किसी को है अधिकार,
करे किसी पर अत्याचार
इन्कलाब जिन्दाबाद।''[19]

'बंगाल का काल' ने बच्चन में क्रान्ति के स्वर में भूख को काली, चण्डी अखण्ड शौर्यशाली कहा है। भूख कुछ भी करा सकती है। इसी भावना को बच्चन ने इस प्रकार व्यक्त किया है :

''भूख प्रचण्ड शक्तिशाली है,
या चंडी सर्वभूतेषु
क्षुधा रूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै
नमस्तयै, नमोनमः।[20]

बच्चन का जीवन दुःखों, कष्टों तथा संघर्षों के साथ बीता है। इसकी अभिव्यक्ति काव्य में क्रान्तिकारी स्वर में उजागर हुई है। क्रान्तिकारी व्यक्ति ही जीवन और समाज को सदृढ़ बना सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि जिस पर हम हंस कर उसे छोड़ देते हैं, बच्चन ने उसे पकड़कर काव्य रचना की। जिन घटनाओं को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों के विरूद्ध मानते थे। उन पर उन्होंने डटकर व्यंग्य किया। बच्चन जनमानस के कवि थे, इसलिए वे जनता की भलाई के पक्षपाती थे। इसलिए उनका काव्य भी जनसाधारण के लिए हैं। बच्चन के काव्य में व्यंग्य का वर्णन अधिक किया गया है। चाहे वह नेता हो, देश के साधारण नागरिक कवि हो या कलाकार उन्होंने व्यंग्य किया है। बच्चन ने अधिकतर कविताओं में लोकतंत्र, सरकार, राजनीति, नेतागिरी आदि का वर्णन किया है।

[19] बच्चनः बंगाल का काल, पृ0-67
[20] बच्चनः बंगाल का काल, पृ0-52